*Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities* ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 111-117

# जनपद पीलीभीत की व्यावसायिक संरचना की प्रवृति का भौगोलिक अध्ययन

**प्रशान्त कुमार[1*] एवं अनिता रुडोला[1]**
[1]भूगोल विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय पौड़ी परिसर-246001 उत्तराखण्ड

*Corresponding Author Email: prashantgangwar030891@gmail.com

Received: 06.06.2017; Revised: 15.07.2017; Accepted: 10.10.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

**सारांश–** प्रस्तुत शोध पत्र "जनपद पीलीभीत की व्यावसायिक संरचना की प्रवृति का भौगोलिक अध्ययन" नामक शीर्षक में जनपद की व्यावसायिक संरचना के द्वितीयक प्रकार के समंको को संकलित कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। यह समंक 1991,2001 तथा 2011 की जनगणना पर आधारित थे। व्यावसायिक संरचना किसी भी क्षेत्र की आर्थिक विशेषताओं को स्पष्ट करती है जिसके लिए कुल कर्मकार, कार्येत्तर जनसंख्या, काश्तकार ,खेतीहर मजदूर,पारिवारिक उद्योग कर्मी,अन्य कर्मी, सीमान्त कर्मकारों का विश्लेषण किया गया है।

**कुंजी शब्द**– व्यावसायिक संरचना, कुल कर्मकार, काश्तकार, सीमान्त कर्मकार

मानव सभ्यता के पूर्ववर्ती दिनों में आदिम मानव की आवश्यकताएँ अत्यन्त सीमित थी और वह उन्ही वस्तुओं का उपयोग करता था जिसको वह स्वयं उत्पन्न करता था उसके उत्पादन की वस्तुएं उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुकूल होती थी। उस काल में किसी प्रशासनिक संस्था के अभाव में व्यावसायिक जटिलता नहीं थी इसलिए मानव नें प्रकृति प्रदत्त फलों,कन्दमूलों,तथा अन्य जंगली वस्तुओं को एकत्रित करना,पशुओं का शिकार करना,मछली पकड़ना,आदि व्यवसाय अपनाये थे। ज्ञान एवं तकनीकी के विकास के साथ–साथ मानव व्यावसायों में विविधता आयी इस प्रकार मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिन माध्यमों को अपनाकर निरन्तर संतुष्टि प्राप्त की वे ही व्यवसाय के रुप में परिणत हो गये।

मनुष्य जिस प्रकार के कार्य में लगा रहता है या जीविकोपार्जन के लिए जो भी आर्थिक क्रियायें करता है उसे व्यावसाय की संज्ञा दी जाती है। किसी भी क्षेत्र की जनांकिकी का अध्ययन तब तक पूर्ण नही होता जब तक जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का विवरण नही दिया जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में जनपद पीलीभीत की व्यावसायिक संरचना की प्रवृति का भौगोलिक अध्ययन किया गया है। किसी देश अथवा प्रदेश के विभिन्न व्यावसायों में कार्यरत जनसंख्या के स्वरुप को व्यावसायिक संरचना की संज्ञा दी जाती है (रिचर्डस,1978)। व्यावसायिक संरचना का अध्ययन जनसंख्या की आर्थिक स्थिति के ज्ञान हेतु आवश्यक है। किसी भी क्षेत्र में लोगों की व्यावसायिक संरचना उसके आर्थिक सामाजिक विकास का प्रतिबिम्ब होती है (शर्मा,1983)। कार्यरत जनसंख्या या व्यावसायरत जनसंख्या अपने आर्थिक क्रियाकलापों द्वारा स्वयं तथा अपने आश्रितो का भरण पोषण करती है (गार्नियर,1978)।

**अध्ययन क्षेत्र–** उप हिमालय क्षेत्र में नेपाल तथा उत्तराखण्ड की सीमा पर रूहेलखण्ड का भाग जनपद पीलीभीत $28^0 6'–28^0 53'$ उत्तरी अंक्षाशीय विस्तार तथा $79^0 57'–80^0 27'$ पूर्वी देशान्तरीय विस्तार के साथ स्थित

है। उत्तर में इसकी सीमा उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) और नेपाल, दक्षिण में शाहजहॉपुर, पश्चिम में इसकी सीमा बरेली तथा पूरब में लखीमपुर खीरी जनपदों से बनती है। अध्ययन क्षेत्र की गोमती, शारदा, देवहा, घाघरा (खाकरा) इत्यादि प्रमुख नदियॉ है। जनगणना 2011 के अनुसार जनपद की जनसंख्या 2031007 है तथा जनसंख्या वृद्धि दर 23.45% है। पीलीभीत जनपद का जनसंख्या घनत्व 551 व्यक्ति/किमी$^2$ तथा लिंगानुपात 895/1000 है। पीलीभीत जनपद में 17.30% नगरीय जनसंख्या तथा 82.70% ग्रामीण जनसंख्या है।जनपद पीलीभीत की साक्षरता दर 61.47% है।

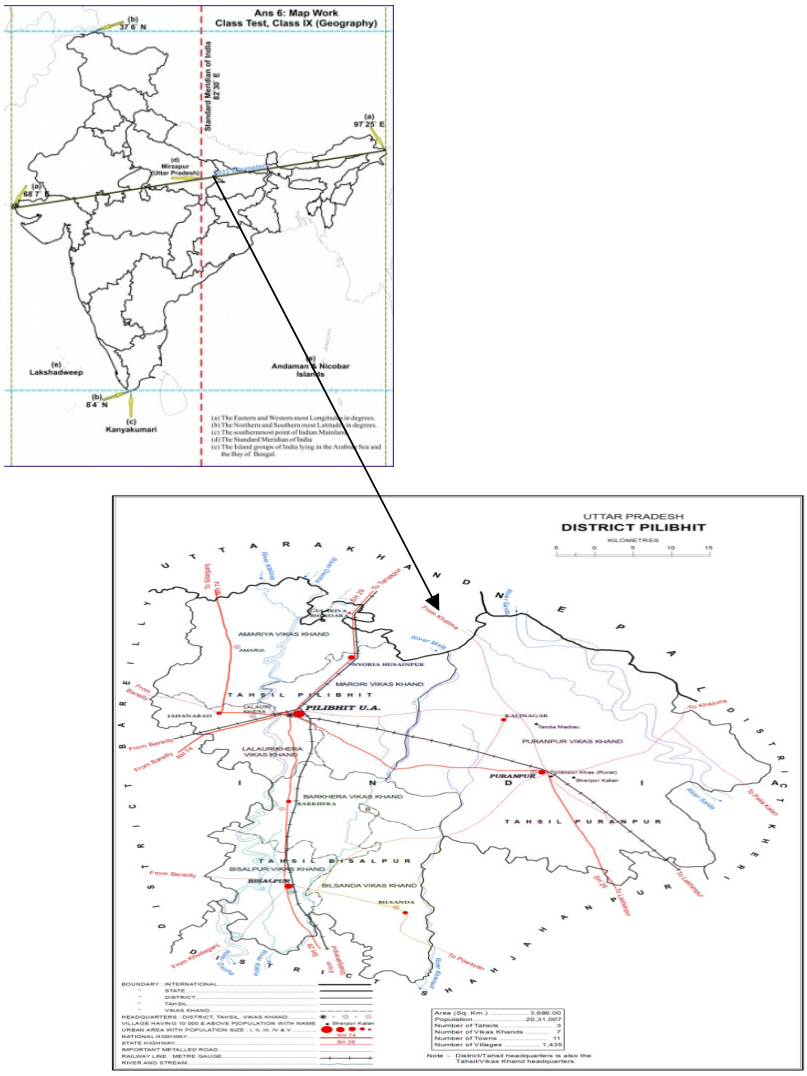


**चित्र संख्या 1:** अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

**अध्ययन के उद्देश्य–**

- व्यावसायिक संरचना में स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
- क्षेत्र की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का विश्लेषण करना।

**ऑकड़े एवं विधितन्त्र–** शोधपत्र द्वितीयक प्रकार के ऑकड़ो पर आधारित है जिसके उद्देश्य पूर्ति हेतु ऑकड़ो को विभिन्न स्त्रोतों से संकलित किया गया है जैसे - जिला जनगणना विवरण पुस्तिका ,जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद पीलीभीत (1991 2001 2011) विकासखण्ड को इकाई मानकर 1991 से लेकर 2011 तक के ऑकड़ो

का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है। कुल जनसंख्या की तुलना में कुल कर्मी के प्रतिशत को कार्य सहभगिता दर कहते हैं।

**कार्य सहभागिता दर = कुल कर्मी ×100 / कुल जनसंख्या**

**व्यावसायिक संरचना–** जीविकोपार्जन के लिए की जानें वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना उसकी आर्थिक विशेषताओं को स्पष्ट करती है व्यावसायिक संरचना के अध्ययन से पता चलता है कि कोई भी क्षेत्र कृषि प्रधान है या उद्योग प्रधान। व्यावसायिक संरचना के आधार पर किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को प्राथमिक,द्वितीयक एवं तृतीयक श्रेणी की अर्थव्यवस्था में विभाजित किया जाता है क्रियाशीलता के आधार पर किसी क्षेत्र की जनसंख्या को दो वर्गों में विभक्त किया गया है - कार्मिक जनसंख्या एवं अकार्मिक जनसंख्या

**1) क्रियाशील या कार्मिक जनसंख्या–** कार्मिक जनसंख्या में उन व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है जो आर्थिक दृष्टि से उत्पादन कार्य में लगे होते हैं जिससे आय या आजीविका प्राप्त करते हैं इसके अन्तर्गत 15–64 वर्ष के व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है जो किसी व्यावसाय (कृषि,पशुपालन,उद्योग,परिवहन एवं सेवाओं) में संलग्न है। 2001 की जनगणना के अनुसार क्रियाशील जनसंख्या को दो वर्गों में बाँटा गया है- मुख्य कर्मकार एवं सीमान्त कर्मकार

पीलीभीत जिले के सन्दर्भ में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या का 30.45% भाग कार्यशील तथा 69.55% कार्येत्तर जनसंख्या के अन्तर्गत आता है जबकि 1991 के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या का 32.24% भाग कार्यशील तथा 67.76% कार्येत्तर जनसंख्या के अन्तर्गत था। 1991 की तुलना में 2011 में कार्यशील जनसंख्या में गिरावट दर्ज की गयी इसका प्रमुख कारण यह है कि वर्तमान में शिक्षा सुविधाओं की बढती उपलब्धता के कारण युवा वर्ग (15–25) अध्ययन में लग जाता है जिस कारण अपना योगदान कार्यशील जनसंख्या में नहीं दे पाते हैं

**सारणी–1** कुल कर्मकार , कुल कर्मकारों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत तथा कार्येत्तर जनसंख्या का प्रतिशत

| विकासखण्ड | 1991 | | | 2001 | | | 2011 | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कुल कर्मकार | कुल कर्मकारों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत | कार्येत्तर जनसंख्या | कुल कर्मकार | कुल कर्मकारों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत | कार्येत्तर जनसंख्या | कुल कर्मकार | कुल कर्मकारों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत | कार्येत्तर जनसंख्या |
| अमरिया | 47430 | 28.55 | 71.45 | 57429 | 27.17 | 72.83 | 74443 | 30.23 | 69.77 |
| मरौरी | 39931 | 30.03 | 69.97 | 52727 | 29.98 | 70.2 | 70327 | 33.50 | 66.5 |
| ललौरी खेड़ा | 31862 | 30.42 | 69.58 | 36742 | 26.83 | 73.17 | 41277 | 29.44 | 70.50 |
| बरखेडा | 36611 | 30.90 | 69.1 | 43493 | 28.94 | 71.06 | 55314 | 31.09 | 68.91 |
| बिलसण्डा | 40873 | 32.66 | 67.34 | 46714 | 28.89 | 71.11 | 54701 | 28.80 | 71.2 |
| बीसलपुर | 36651 | 32.26 | 67.74 | 40023 | 28.37 | 71.63 | 50464 | 30.13 | 69.87 |
| पूरनपुर | 89394 | 31.49 | 68.51 | 132037 | 28.90 | 71.1 | 167161 | 30.50 | 69.5 |
| योग ग्रामीण | 323391 | 30.90 | 69.1 | 409165 | 28.53 | 71.47 | 513687 | 30.58 | 69.42 |
| योग नगरीय | 64688 | 27.31 | 72.69 | 77137 | 26.21 | 73.99 | 104918 | 29.85 | 70.5 |
| योग जनपद | 388079 | 32.24 | 67.76 | 486302 | 28.14 | 71.86 | 618605 | 30.45 | 69.55 |

स्त्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद पीलीभीत 1991,2001,2011

1991 की जनगणना के अनुसार पीलीभीत जिले में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या विकासखण्ड विलसण्डा 32. 66% में उसके बाद क्रमशः बीसलपुर 32.26%,पूरनपुर 31.49%, बरखेडा 30.90% ,ललौरीखेडा 30.42%,मरौरी 30.03% तथा अमरिया में 28.55% थी , जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या विकासखण्ड मरौरी 33.50%, उसके बाद क्रमशः बरखेडा 31.09%, पूरनपुर 30.50%, अमरिया 30.23% तथा बीसलपुर 30.15% में है। मरौरी विकासखण्ड में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या का संकेन्द्रण होने का प्रमुख कारण पीलीभीत जिले का मुख्यालय,सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों का होना है जिसकी वजह से द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलापों में लगे व्यक्तियों की संख्या अधिक है। जबकि न्यूनतम कार्यशील जनसंख्या 1991 की जनगणना के अनुसार अमरिया 28.55% तथा 2001 के अनुसार ललौरीखेडा 26.83% तथा 2011 में परिवर्तित होकर विकासखण्ड विलसण्डा 28.80% में पायी गयी है , इसका प्रमुख कारण लोगों के अपने परम्परागत व्यावसायों को छोडने से अक्रियाशीलता का बढना रहा है।

**2) अक्रियाशील या अकार्मिक जनसंख्या–** अकार्मिक जनसंख्या वह भाग है जिसका आर्थिक उत्पादन में योगदान नगण्य होता है इसके अन्तर्गत बाल जनसंख्या,वृद्ध जनसंख्या, शारीरिक रुप से अक्षम व्यक्ति गृहस्थ स्त्रियाँ एवं बेरोजगार व्यक्ति होते है जो कार्यशील जनसंख्या पर आर्थिक रुप से आश्रित रहते हैं। 1991 की जनगणना अनुसार पीलीभीत जिले में 67.76% कार्येत्तर जनसंख्या थी वहीं ग्रामीण क्षेत्रो में 69.01% तथा नगरीय क्षेत्रो में 72.69% कार्येत्तर जनसंख्या थी। 2001 की जनगणना के अनुसार 71.86% तथा 2011 की जनगणना के अनुसार 69.55% जनसंख्या अकार्यशील श्रेणी में आता है, वही 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रो में 71.47% तथा 69.42% जनसंख्या अकार्यशील थी जबकि 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार नगरीय क्षेत्रो में 73.99% तथा 70.5% भाग कार्येत्तर जनसंख्या थी।तीनो दशकों में नगरीय क्षेत्रो में ग्रामीण क्षेत्रो की तुलना में अक्रियाशील जनसंख्या अधिक दिखलायी देती है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रो में अकुशल व्यक्ति भी कृषि तथा सम्बन्धित क्षेत्रो में क्रियाशील रहता है जबकि नगरीय क्षेत्रो में द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाओं की अधिकता होने के कारण कुशल व्यक्तियों की आवश्यकता पडती है ,जनपद के नगरीय क्षेत्रो में कुशल व्यक्तियों के अभाव के कारण अक्रियाशीलता अधिक है।

**a) मुख्य कर्मकार–** ऐसे कर्मी जिन्होने सन्दर्भ के अधिकांश भाग में (6 महीने या उससे अधिक) कोई काम किया हो,मुख्य कर्मकार कहलाते है ये कर्मकार ही किसी भी क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना के मूल आधार होते हैं। 2001 की जनगणना अनुसार कर्मकारों को चार औद्योगिक श्रेणियों में विभाजित किया गया है

- काश्तकार
- खेतीहर मजदूर
- पारिवारिक उद्योग कर्मी
- अन्य कर्मी

**सारणी–2** पीलीभीत जनपद के विभिन्न विकासखडो में कृषक, कृषि श्रमिक, परिवारिक उद्योग कर्मकार एवं अन्य कर्मकार का मुख्य कर्मकारों से प्रतिशत

| विकासखण्ड | 1991 | | | | 2001 | | | | 2011 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कृषक | कृषि श्रमिक | परिवारिक उद्योग | अन्य कर्मकार | कृषक | कृषि श्रमिक | परिवारिक उद्योग | अन्य कर्मकार | कृषक | कृषि श्रमिक | परिवारिक उद्योग | अन्य कर्मकार |
| अमरिया | 66.15 | 26.09 | 0.4 | 7.34 | 59.8 | 24.24 | 2.32 | 13.62 | 44.1 | 39.05 | 1.22 | 15.61 |
| मरौरी | 75.95 | 15.47 | 0.35 | 8.2 | 66.64 | 18.26 | 2.44 | 12.65 | 52.98 | 24.47 | 2.76 | 13.8 |
| ललौरी खेड़ा | 66.48 | 20.05 | 0.6 | 12.85 | 58.94 | 15.21 | 2.06 | 23.78 | 48.91 | 32.69 | 2.62 | 15.75 |
| बरखेडा | 78.86 | 13.86 | 0.94 | 6.32 | 73.31 | 16.17 | 2.35 | 8.15 | 57.02 | 31.15 | 2.31 | 9.5 |
| बिलसण्डा | 78.42 | 16.45 | 0.43 | 4.67 | 68.92 | 19.31 | 2.56 | 9.19 | 55.61 | 32.17 | 1.68 | 10.52 |
| बैसलपुर | 71.67 | 17.32 | 0.4 | 9.73 | 65.61 | 16.78 | 3.24 | 14.36 | 51.78 | 26.97 | 4.52 | 16.71 |
| पूनपुर | 70.6 | 19.97 | 0.45 | 8.96 | 64.11 | 21.37 | 2.42 | 12.09 | 46.41 | 37.19 | 2.16 | 14.22 |
| योग ग्रामीण | 72.16 | 18.99 | 0.59 | 8.24 | 65.09 | 19.56 | 2.47 | 12.86 | 49.81 | 33.99 | 2.34 | 13.84 |
| योग नगरीय | 12.1 | 14.3 | 2.42 | 71.16 | 6.58 | 4.88 | 4.48 | 84.04 | 7.01 | 10.77 | 4.27 | 77.93 |
| योग जनपद | 61.92 | 18.19 | 0.9 | 18.97 | 55.45 | 17.15 | 2.8 | 24.58 | 42.22 | 29.87 | 2.68 | 25.21 |

स्त्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद पीलीभीत 1991,2001,2011

**काश्तकार/कृषक–** कृषक से अभिप्राय है कि वह व्यक्ति जो स्वयं की भूमि या सरकार से प्राप्त भूमि या किसी व्यक्ति की भूमि जो बटाई पर प्राप्त की हो, पर कृषि या उससे सम्बन्धित क्रियाकलापों जैसे जुताई,बुआई,सिचाईं,पशुपालन,मत्स्य पालन आदि को संपादित करता है। ये व्यक्ति अनाज उत्पादन के साथ साथ अनेक उद्योगों के लिए कच्चे माल को भी उत्पादित करता है । ये भूमि पर अकेले या परिवार के साथ क्रियाशील रहता है। 1991 की जनगणना अनुसार पीलीभीत जिले में कृषकों की संख्या 61.92% थी , 2001 तथा 2011 में यह संख्या घटकर 55.45% एवं 42.22% रह गयी। विकासखण्डवार दृष्टिपात करने पर 1991 में सर्वाधिक कृषक बरखेडा 78.46% विलसण्डा 78.42% मरौरी 5.95% बीसलपुर 71.67% में तथा सबसे कम अमरिया 66.15% एवं ललौरीखेडा 66.48% में मिलते हैं, जबकि 2001 एवं 2011 के अनुसार सभी विकासखण्डों में कृषकों की संख्या में गिरावट दर्ज की गयी है।

**खेतीहर मजदूर/कृषि श्रमिक**–कृषि श्रमिक वे व्यक्ति होते हैं जो दूसरों की भूमि पर मजदूर के रुप में कार्य करते है इनको उसके बदले नकद या वस्तु के रुप में मजदूरी प्राप्त होती है इनका उस भूमि पर, जिस पर ये काम करते है, कोई भी मालिकाना हक नहीं होता है 1991 की जनगणना के अनुसार पीलीभीत जिले में कृषि श्रमिकों की संख्या 18.19% थी जो 2001 में घटकर 17.15% रह गयी जबकि 2011 में बढकर 29.87% हो गयी। विकासखण्डवार दृष्टिपात करने पर 2011 में सर्वाधिक कृषि श्रमिक वाला विकासखण्ड अमरिया 39.05% तथा न्यूनतम कृषि श्रमिक विकासखण्ड मरौरी 24.47% है । जनपद के पाँच विकासखण्डों में कृषि श्रमिकों की संख्या जनपद के कृषि श्रमिकों के औसत से अधिक तथा दो विकासखण्डों में कम है। 1991 की तुलना में 2011 में कृषि श्रमिकों की संख्या में अत्याधिक वृद्धि देखी गयी जिसका प्रमुख कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि तथा तुलनात्मक रुप से, उद्योग धन्धों का धीमा हैं।

**काश्तकार/कृषक**– कृषक से अभिप्राय है कि वह व्यक्ति जो स्वयं की भूमि या सरकार से प्राप्त भूमि या किसी व्यक्ति की भूमि जो बटाई पर प्राप्त की हो, पर कृषि या उससे सम्बन्धित क्रियाकलापों जैसे जुताई,बुआई,सिचाईं,पशुपालन,मत्स्य पालन आदि को संपादित करता है। ये व्यक्ति अनाज उत्पादन के साथ साथ अनेक उद्योगों के लिए कच्चे माल को भी उत्पादित करता है । ये भूमि पर अकेले या परिवार के साथ क्रियाशील रहता है। 1991 की जनगणना अनुसार पीलीभीत जिले में कृषकों की संख्या 61.92% थी , 2001 तथा 2011 में यह संख्या घटकर 55.45% एवं 42.22% रह गयी। विकासखण्डवार दृष्टिपात करने पर 1991 में सर्वाधिक कृषक बरखेडा 78.46% विलसण्डा 78.42: मरौरी 5.95% बीसलपुर 71.67% में तथा सबसे कम अमरिया 66.15% एवं ललौरीखेडा 66.48% में मिलते हैं, जबकि 2001 एवं 2011 के अनुसार सभी विकासखण्डों में कृषकों की संख्या में गिरावट दर्ज की गयी है।

**खेतीहर मजदूर/कृषि श्रमिक**–कृषि श्रमिक वे व्यक्ति होते हैं जो दूसरों की भूमि पर मजदूर के रुप में कार्य करते है इनको उसके बदले नकद या वस्तु के रुप में मजदूरी प्राप्त होती है इनका उस भूमि पर, जिस पर ये काम करते है, कोई भी मालिकाना हक नहीं होता है 1991 की जनगणना के अनुसार पीलीभीत जिले में कृषि श्रमिकों की संख्या 18.19% थी जो 2001 में घटकर 17.15% रह गयी जबकि 2011 में बढकर 29.87% हो गयी। विकासखण्डवार दृष्टिपात करने पर 2011 में सर्वाधिक कृषि श्रमिक वाला विकासखण्ड अमरिया 39.05: तथा न्यूनतम कृषि श्रमिक विकासखण्ड मरौरी 24.47% है । जनपद के पाँच विकासखण्डों में कृषि श्रमिकों की संख्या जनपद के कृषि श्रमिकों के औसत से अधिक तथा दो विकासखण्डों में कम है। 1991 की तुलना में 2011 में कृषि श्रमिकों की संख्या में अत्याधिक वृद्धि देखी गयी जिसका प्रमुख कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि तथा तुलनात्मक रुप से, उद्योग धन्धों का धीमा हैं।

**पारिवारिक उद्योग कर्मी**–पारिवारिक उद्योग (घरेलू उद्योग) का तात्पर्य ऐसे उद्योग से है जो वंशुनगत हो एवं उसमें परिवार के मुखिया द्वारा परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर अपनें गाँव या नगर के उस मकान के

अन्दर या आहते में जिसमें परिवार रहता है चलाया जाता है , ऐसे उद्योग में लगे सभी सदस्य पारिवारिक उद्योग कर्मी कहलाते हैं। जनपद में 1991,2001 तथा 2011 की जनगणना के अनुसार पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मियों की संख्या क्रमशः 0.90%, 2.80% तथा 2.68% है, पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या तीनों दशक में उतार चढाव की प्रवृत्ति को दर्शाती है। 1991 की जनगणना के अनुसार,सर्वाधिक उद्योग कर्मी विकासखण्ड बरखेडा 0.94% में थे जो कि जनपद के कुल औसत उद्योग कर्मी 0.90% से अधिक है शेष 6 विकासखण्डों में पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या जनपद के कुल औसत से कम है।जबकि 2001 में एक विकासखण्ड बीसलपुर 3.24% तथा 2011 में दो विकासखण्डों में मरौरी 2.76% तथा बीसलपुर 4.52% में जनपद के कुल औसत 2.80% (2001) तथा 2.68% (2011)से अधिक पारिवारिक उद्योग कर्मी हैं।

**अन्य कर्मी–** अन्य कर्मी के अन्तर्गत कई व्यावसाय के लोग सम्मिलित किये जाते हैं शेष सभी कर्मी (कृषक, कृषि श्रमिक ,व पारिवारिक उद्योग कर्मी को छोडकर) अन्य कर्मी कहे जाते हैं (जनगणना 2011)

अध्ययन क्षेत्र में 1991 की जनगणना के अनुसार 18.97% लोग अन्य कर्मी में सम्मिलित थे जो 2011 की जनगणना में बढकर 25.21% हो गये 2011 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य कर्मी 13.84: जबकि नगरीय क्षेत्रों में 77.93: पाये गये सर्वाधिक अन्य कर्मी वाला विकासखण्ड 1991 में ललौरीखेडा 12.85: ,2001 में ललौरीखेडा 23.78% था जबकि 2011 में बीसलपुर 16.71% हो गया।

**सीमान्त कर्मकार–** जो कामगार या श्रमिक 180 दिन या इससे कम दिनों के लिए रोजगार पाता है उसे सीमान्त कर्मकार कहते है। इन्हे अर्द्धबेरोजगार की संज्ञा दी जाती है इनका आर्थिक उत्पादन में योगदान बहुत कम होता है। 1991 की जनगणना के अनुसार पीलीभीत जिले में सर्वाधिक सीमान्त कर्मकार बीसलपुर विकासखण्ड 7.60% में मिलते है जिसका अनुसरण बिलसण्डा6.57%,ललौरीखेडा 6.33% ,पूरनपुर 4.56%,बरखेडा 4.47% करते है सबसे कम सीमान्त कर्मकार विकासखण्ड अमरिया 2.08% में हैं। 2001 तथा 2011 की जनगणना अनुसार सर्वाधिक सीमान्त कर्मकार क्रमशः मरौरी में 26.48% एवं 28.61% मिलते है जबकि सबसे कम सीमान्त कर्मकार 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार क्रमशः बिलसण्डा 19.75% एवं ललौरीखेडा 21.68% में है। अध्ययन क्षेत्र में सीमान्त कर्मकारों की लगातार बढती जनसंख्या का कारण प्रच्छन्न बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि, तकनीकी ज्ञान व कौशल की कमी,रोजगार का अभाव इत्यादि मुख्य कारण है।

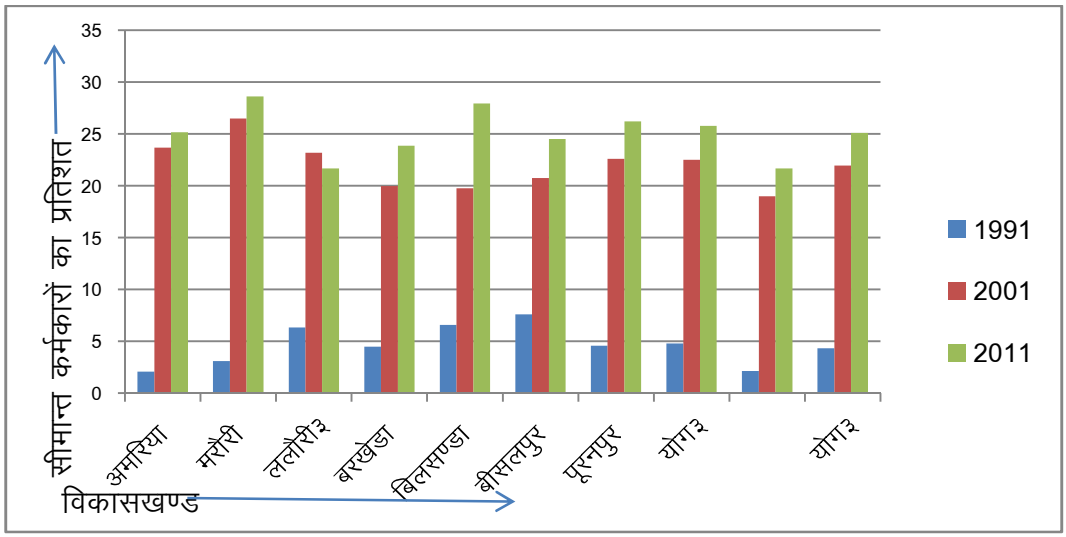


**चित्र संख्या–2** सीमान्त कर्मकारों का कुल कर्मकारों से प्रतिशत 1991,2001,2011

**निष्कर्ष–** प्रस्तुत अध्ययन के व्यावसाय वार समकों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र पीलीभीत कृषि प्रधान है एवं औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त पिछडा हुआ क्षेत्र है। सारणी-2 से स्पष्ट है कि क्षेत्र में लोगों की कृषि पर निर्भरता लगातार घट रही है किन्तु जिस दर से कृषि पर निर्भरता कम हुयी है उस दर से अन्य कर्मी एवं पारिवारिक उद्योग कर्मियों की संख्या में वृद्धि नहीं हुयी है जबकि कृषि श्रमिकों की संख्या में लगातार वृद्धि दर्ज की गयी है इसका परिणाम यह हुआ है कि क्षेत्र में बेरोजगारी बढी है। व्यावसाय वार समंक किसी समाज की आर्थिक स्थिति एवं उसमें होने वाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालते है अतः जनपद की आर्थिक संरचना में परिवर्तन तो आया है किन्तु उससे जनसंख्या के व्यवसायवार संरचना में परिवर्तन कम देखने को मिला है क्योंकि जिस गति से जनसंख्या में वृद्धि हुयी है उस गति से उद्योगों का विकास नहीं हो पाया है।

## संदर्भ सूची


गारनियर, जे बी,(1978): जनसंख्या भूगोल ,लंदन और न्यूयार्क, पृष्ठ संख्या,291

चान्दना, आर सी (1980): जनसंख्या भूगोल का परिचय,कल्यानी प्रकाशन ,नई दिल्ली,पृष्ठ संख्या.265.

जिला सांख्यिकी पत्रिका 1991,2001,2011.

भारत की जनगणना, 1991,2001,2011.

रिचर्डस,आई,(1978): जनपद मेरठ में जनसंख्या और अधिवास,पी0एच0डी0 थीसिस, (अप्रकाशित,गोरखपुर विश्वविद्यालय), पृष्ठ संख्या, 43.

शर्मा, श्री कमल (1983): मध्य प्रदेश में क्रियाशील जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना और कृषि विकास में सम्बन्ध,विकासशील भूगोल पत्रिका ,वर्ष 2,संख्या 1,पृष्ठ सं0-27से 35.


*******